जुमे का खुतबा

दिनांक: 17 सफ़र 1448 हिजरी, तदनुसार 31 जुलाई 2026 ई.

عِلَاجُ الْهُمُومِ وَالْأَحْزَانِ

चिंता और दुःख का इलाज

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ) [آل عمران: 102]، (يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا) [النساء: 1]. { يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا } [الأحزاب: 70].

أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ أَصْدَقَ الْحَدِيثِ كَلَامُ اللهِ تَعَالَى، وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَشَرَّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا، وَكُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ، وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ، وَكُلَّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ.

इस्लामी भाइयो! अल्लाह तआला आप पर अपनी रहमतें उतारे। याद रखिए कि यह दुनिया परीक्षा और आज़माइश की जगह है। चिंता और दुःख इस दुनिया की फ़ितरत का हिस्सा हैं, जो बीमारियों, कठिनाइयों, मुसीबतों और शोकों के रूप में इंसान को पहुँचते रहते हैं। अल्लाह तआला का इरशाद है:

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ (البلد: 4)

"निस्संदेह हमने इंसान को कठिनाई में रहने वाला पैदा किया है।" (सूरह अल्-बलद:4)

यानी इंसान कठिनाइयों में रहता है, उनकी आपत्तियों को झेलता है और उनका सामना करता है। इसी कारण जन्नत को दुनिया पर यह विशेषता प्राप्त है कि वह ऐसा घर है जिसमें न कोई चिंता है और न कोई दुःख; अल्लाह तआला का इरशाद है:

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ (الحجر: 48)

"न वहाँ उन्हें कोई थकान छुएगी और न वे वहाँ से कभी निकाले जाएँगे।" (सूरह अल्-हिज्र:48)

और जन्नत वालों के दिलों को एक वाक्य से भी कोई दुःख नहीं पहुँचेगा; अल्लाह तआला का इरशाद है:

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا (25) إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا (الواقعة: 25، 26)

"वे वहाँ न कोई व्यर्थ बात सुनेंगे और न पाप की बात, सिवाय इस कथन के कि सलाम हो, सलाम हो।" (सूरह अल्-वाक़िआः 25,26)

ऐ अल्लाह के बंदो! निस्संदेह दुःख और चिंता अल्लाह तआला की ओर जाने वाले रास्ते में रुकावट हैं, यही कारण है कि अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में कहीं भी दुःख रखने का आदेश नहीं दिया, न इसकी प्रशंसा की है, और न ही दुःख माँगने पर कोई पुण्य और सवाब रखा है; बल्कि कई स्थानों पर इससे मना फ़रमाया है। चुनांचे अल्लाह तआला का इरशाद है:

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ (آل عمران: 139)

"और तुम कमज़ोर न पड़ो और न दुःखी हो, तुम ही विजयी रहोगे यदि तुम मोमिन हो।"

इसलिए बंदे पर अनिवार्य है कि वह जहाँ तक संभव हो चिंता और दुःख को दूर करने का प्रयास करे, और उनके पीछे न चला करे। इसी कारण नबी करीम ﷺ ने इनसे पनाह माँगी है, चुनांचे आप ﷺ ने फ़रमाया:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ (رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ مِنْ حَدِيثِ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ)

"ऐ अल्लाह! मैं चिंता और दुःख से, असमर्थता और आलस्य से, कंजूसी और कायरता से, और कर्ज़ के बोझ तथा लोगों के दबदबे से तेरी पनाह माँगता हूँ।" (इस हदीस को इमाम बुखारी ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है)

और बंदे के लिए बेहतर है कि जब वह अपने भाई को चिंतित या दुःखी देखे, तो उसकी चिंता और दुःख को दूर करने की कोशिश करे और उससे ऐसी बातें करे जो उसकी परेशानी को दूर करें और उसके दिल को खुश कर दें। अल्लाह तआला अपने नबी ﷺ के विषय में कहता है:

إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا (التوبة: 40)

"जब वे अपने साथी से कह रहे थे कि ग़म न करो, निस्संदेह अल्लाह हमारे साथ है।" (सूरह अत्-तौबाः 40)

और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया:

لَأَقُولَنَّ شَيْئًا يُضْحِكُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ مِنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا)

"मैं ज़रूर कोई ऐसी बात कहूँगा जिससे नबी करीम ﷺ मुस्कुरा उठेंगे।" (इस हदीस को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है)

इस्लामी भाइयो! परेशानी और दुःख से मुक्ति पाने का एक बहुत बड़ा कारण अल्लाह के फ़ैसले और तक़दीर पर ईमान लाना है, और इस बात पर पक्का विश्वास रखना है कि अल्लाह तआला ने बंदे की क़िस्मत में जो लिख दिया है, वह अनिवार्य रूप से होकर रहेगा। अल्लाह तआला का आदेश है:

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ (22) لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ (الحديد: 22، 23)

"धरती में या स्वयं तुम्हारे प्राणों पर जो कोई भी मुसीबत आती है, वह इससे पहले कि हम उसे पैदा करें, एक किताब में (लिखी हुई) है। निस्संदेह यह काम अल्लाह पर बहुत आसान है। ताकि जो चीज़ तुम्हारे हाथ से निकल जाए उस पर तुम दुःख न करो, और जो कुछ वह तुम्हें प्रदान करे उस पर इतराओ नहीं। और अल्लाह किसी भी घमंडी, डींग मारने वाले को पसंद नहीं करता।" (सूरह अल्-हदीदः 22,23)

और यह ईमान नेक आमाल के साथ जुड़ा हुआ होना चाहिए; अल्लाह तआला ने कहा:

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (النحل: 97)

"जो व्यक्ति भी नेक अमल करे, चाहे पुरुष हो या स्त्री, बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो हम उसे पवित्र जीवन व्यतीत कराएँगे और (आख़िरत में) उनके अच्छे कामों के अनुसार उन्हें उनका बदला प्रदान करेंगे।" (सूरह अन्-नह्लः 97)

और नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

عَجَبًا لِأَمْرِ الْمُؤْمِنِ، إِنَّ أَمْرَهُ كُلَّهُ خَيْرٌ، وَلَيْسَ ذَاكَ لِأَحَدٍ إِلَّا لِلْمُؤْمِنِ، إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ، فَكَانَ خَيْرًا لَهُ، وَإِنْ أَصَابَتْهُ ضَرَّاءُ صَبَرَ، فَكَانَ خَيْرًا لَهُ (رَوَاهُ مُسْلِمٌ مِنْ حَدِيثِ صُهَيْبِ بْنِ سِنَانٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ)

"मोमिन का मामला भी अजीब है, उसके हर मामले में भलाई ही भलाई है, और यह सौभाग्य मोमिन के सिवा किसी को प्राप्त नहीं होता। यदि उसे ख़ुशी पहुँचती है तो वह शुक्र अदा करता

है, और यह उसके लिए उत्तम होता है, और यदि उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो सब्र करता है, और यह भी उसके लिए उत्तम होता है।" (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने हज़रत सुहैब बिन सिनान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।)

दुःख और चिंता से मुक्ति पाने का एक माध्यम यह भी है कि नबियों और नेक लोगों के पदचिह्नों पर चला जाए, और उन्हें अपने लिए रोल मॉडल बनाया जाए; क्योंकि उन पर भी कठिन परीक्षाएँ आईं, लेकिन उन्होंने उत्तम सब्र का प्रदर्शन किया। चुनांचे हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, वह फ़रमाते हैं कि:

قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَيُّ النَّاسِ أَشَدُّ بَلَاءً؟ قَالَ» : الْأَنْبِيَاءُ، ثُمَّ الْأَمْثَلُ فَالْأَمْثَلُ، فَيُبْتَلَى الرَّجُلُ عَلَى حَسَبِ دِينِهِ، فَإِنْ كَانَ فِي دِينِهِ صُلْبًا اشْتَدَّ بَلَاؤُهُ، وَإِنْ كَانَ فِي دِينِهِ رِقَّةٌ ابْتُلِيَ عَلَى حَسَبِ دِينِهِ، فَمَا يَبْرَحُ الْبَلَاءُ بِالْعَبْدِ حَتَّى يَتْرُكَهُ يَمْشِي عَلَى الْأَرْضِ وَمَا عَلَيْهِ خَطِيئَةٌ (رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَصَحَّحَهُ الْأَلْبَانِي)

मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! लोगों में सबसे कठिन परीक्षा किसकी होती है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "नबियों की, फिर जो उनके बाद दर्जे में उत्तम हों, फिर जो उनके बाद उत्तम हों। इंसान की परीक्षा उसके दीन के अनुसार होती है; यदि वह अपने दीन में पक्का हो तो उसकी परीक्षा भी कठिन होती है, और यदि उसके दीन में कमज़ोरी हो तो उसके दीन के अनुसार ही उसकी परीक्षा होती है। फिर परीक्षा बंदे के साथ लगातार रहती है यहाँ तक कि उसे इस हाल में छोड़ती है कि वह धरती पर इस प्रकार चलता है कि उस पर कोई गुनाह बाक़ी नहीं रहता।" (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने इसे सही क़रार दिया है)

दुःख और चिंता से मुक्ति पाने के कारणों में से: लोगों की परेशानियों को दूर करना और उनके साथ भलाई तथा उपकार करना भी है; क्योंकि बदला अमल के हिसाब से ही मिलता है। चुनांचे सही मुस्लिम की रिवायत है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

مَنْ نَفَّسَ عَنْ مُؤْمِنٍ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا نَفَّسَ اللهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ يَسَّرَ عَلَى مُعْسِرٍ يَسَّرَ اللهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، وَاللهُ فِي عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِي عَوْنِ أَخِيهِ

"जिसने किसी मोमिन से दुनिया की परेशानियों में से कोई परेशानी दूर की, अल्लाह तआला क़यामत के दिन की परेशानियों में से उसकी परेशानी दूर फ़रमाएगा, और जिसने किसी कठिनाई

में पड़े व्यक्ति पर आसानी की, अल्लाह तआला उस पर दुनिया और आख़िरत में आसानी फ़रमाएगा, और जिसने किसी मुसलमान के दोष पर पर्दा डाला, अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में उसके ऐब पर पर्दा डालेगा, और अल्लाह बंदे की सहायता में उस समय तक रहता है जब तक बंदा अपने भाई की सहायता में लगा रहता है।"(सही मुस्लिम)

أَقُولُ مَا تَسْمَعُونَ، وَأَسْتَغْفِرُ اللهَ لِي وَلَكُمْ، فَاسْتَغْفِرُوهُ؛ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.

दूसरा ख़ुत्बा

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، لَهُ الْحَمْدُ الْحَسَنُ وَالثَّنَاءُ الْجَمِيلُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا إِلَى يَوْمِ الدِّينِ.

अल्लाह की प्रशंसा और स्तुति के पश्चात्: दुःख और चिंता से मुक्ति पाने के सबसे बड़े कारणों में से: दुआ, विनम्रता और रोने-गिड़गिड़ाने के द्वारा अल्लाह तआला की ओर लौटना, और उस पवित्र महिमा का ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करना है; क्योंकि जो आदमी उसकी पनाह लेता है वह उसे कभी निराश नहीं लौटाता, वह अत्यन्त दयालु और सूक्ष्मदर्शी है। अल्लाह तआला ने कहा:

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ أَإِلَٰهٌ مَعَ اللَّهِ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ (النمل: 62)

"भला कौन है जो बेक़रार (व्याकुल) की दुआ सुनता है जब वह उसे पुकारता है, और (उसकी) तकलीफ़ को दूर करता है, और तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बनाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और पूज्य है? तुम बहुत ही कम शिक्षा ग्रहण करते हो।"

और अल्लाह तआला ने कहा:

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ (97) فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ (الحجر: 97، 98)

"और निस्संदेह हम जानते हैं कि जो बातें वे बनाते हैं उनसे आपका दिल तंग होता है; अतः आप अपने रब की प्रशंसा के साथ तस्बीह कीजिए और सजदा करने वालों में शामिल हो जाइए।" (सूरह अल्-हिज्रः 97-98)

और हमारे नबी करीम ﷺ ने हमें एक ऐसी महान दुआ सिखाई है जिसका हमें दुःख और चिंता आने के समय विशेष ध्यान रखना चाहिए; चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

مَا أَصَابَ أَحَدًا قَطُّ هَمٌّ وَلَا حَزَنٌ، فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ، وَابْنُ عَبْدِكَ، وَابْنُ أَمَتِكَ، نَاصِيَتِي بِيَدِكَ، مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ، أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ، أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ، أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ، أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي، وَنُورَ صَدْرِي، وَجَلَاءَ حُزْنِي، وَذَهَابَ هَمِّي، إِلَّا أَذْهَبَ اللَّهُ هَمَّهُ وَحُزْنَهُ، وَأَبْدَلَهُ مَكَانَهُ فَرَجًا (رَوَاهُ أَحْمَدُ وَصَحَّحَهُ الْأَلْبَانِيُّ)

"जब भी किसी आदमी को कोई चिंता या दुःख पहुँचे और वह यह कहे:
'ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरा बंदा हूँ, तेरे बंदे का बेटा हूँ, तेरी दासी का बेटा हूँ, मेरा माथा तेरे हाथ में है, मुझ पर तेरा ही हुक्म चलता है, मेरे हक़ में तेरा फ़ैसला पूर्णतः न्यायपूर्ण है, मैं तुझसे तेरे हर उस नाम के वास्ते से सवाल करता हूँ जो तेरा है, जिससे तूने स्वयं को पुकारा, या जिसे तूने अपनी किताब में उतारा, या अपनी सृष्टि में से किसी को सिखाया, या उसे अपने पास ग़ैब (परोक्ष) के ज्ञान में सुरक्षित रखा, (मैं सवाल करता हूँ) कि तू कुरआन मजीद को मेरे दिल की बहार, मेरे सीने का प्रकाश, और मेरे दुःख को दूर करने का साधन तथा कारण बना दे।'
तो अल्लाह तआला उसकी चिंता और दुःख को ज़रूर दूर कर देता है और उसके स्थान पर उसे ख़ुशी और राहत प्रदान कर देता है।" सहाबा ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम इस दुआ को सीख न लें? आप ﷺ ने फ़रमाया:

بَلَى؛ يَنْبَغِي لِمَنْ سَمِعَهَا أَنْ يَتَعَلَّمَهَا

"क्यों नहीं! जो व्यक्ति इस दुआ को सुने उसके लिए उचित है कि वह इसे सीख ले।"
(इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी रहमहुल्लाह ने इसे सही क़रार दिया है)
और सही बुखारी और सही मुस्लिम की रिवायत है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी करीम ﷺ परेशानी और बेचैनी के समय यह दुआ पढ़ा करते थे:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ

"महान और सहनशील अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, महान अर्श के रब अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, आकाशों के रब, धरती के रब और सम्मानित सिंहासन के रब अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं।" (सही बुखारी, सही मुस्लिम)

हम अल्लाह ताला से दुआ करते हैं कि वह हमारे दुःख-दर्द और हमारी परेशानियों को दूर फ़रमाए, और महान कुरआन को हमारे दिलों की बहार बना दे। ऐ अल्लाह! अपने बंदे और अपने नबी मुहम्मद ﷺ पर अनगिनत दरूद व सलाम नाज़िल फ़रमा, और आपके खुलफ़ा-ए-राशिदीन, मोमिनों की माताओं अर्थात् नबी ﷺ पत्नियों, और समस्त सहाबा-ए-किराम से राज़ी हो जा; और उन लोगों से भी जो क़यामत तक भलाई और उत्तमता के साथ उनका अनुसरण करें, और ऐ सबसे बढ़कर करम करने वाले! अपनी उदारता और करम से उनके साथ-साथ हमसे भी राज़ी हो जा। ऐ अल्लाह! ईमान को हमारे लिए प्रिय बना दे और उसे हमारे दिलों की ज़ीनत बना दे, तथा कुफ़्र, पाप और नाफरमानी को हमारे लिए अप्रिय बना दे, और हमें हिदायत हासिल करने वालों में शामिल फ़रमा ले! ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को ग़लबा और सम्मान प्रदान कर, तथा शिर्क और मुशरिकों को अपमानित कर दे! ऐ अल्लाह! कुवैत और इसके निवासियों की हर बुराई, फ़ितने और अप्रिय बात से हिफ़ाज़त फ़रमा, और इस देश के साथ-साथ मुसलमानों के समस्त देशों को शांति, सुरक्षा और संतोष का केंद्र बना दे! ऐ अल्लाह! सीमाओं के रक्षक हमारे भाइयों, सुरक्षा बलों, रक्षा संस्थानों, नेशनल गार्ड्स, फ़ायर ब्रिगेड और देश की कानून-व्यवस्था में लगे समस्त कर्मियों की रक्षा फ़रमा, और उनके क़दमों को दृढ़ता और स्थिरता प्रदान कर! ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली-ए-अहद को उन कार्यों की तौफ़ीक़ प्रदान कर जो तुझे पसंद हैं और जिनसे तू राज़ी होता है, और उन्हें नेकी और तक़्वा (ईश-भय) के मार्ग पर चला!

وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ.

ख़ुत्बात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटि